RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-05
Issue-04
April -2020

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]

अमीर खुसरो और जायसी के काव्य में तत्कालीन समाज

देवेन्द्र सिंह

शोधार्थी, हिन्दी विभाग राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 16 April 2020

Keywords
जनमानस, जायसी, काव्य, प्रचलित, सामाजिक, सांस्कृतिक

ABSTRACT

''साहित्य समाज का दर्पण होता है'' यह उक्ति अमीर खुसरो और मलिक मुहम्मद जायसी के काव्य में अक्षरशः लागू होती है। अमीर खुसरो ने अपनी कविता में एक ओर जनमानस से जुड़ने के लिए हिन्दी को अपनाया वहीं उन्होंने समाज में प्रचलित बोलचाल, व्यवहार, खानपान, रिश्ते–नाते आदि सभी सामाजिक और सांस्कृतिक तत्वों को अपनी कविता में स्थान दिया और उसे आम आदमी के ह्रदय की अभिव्यक्ति बना दिया।

शोध विस्तार – अमीर खुसरो ने अपने काव्य में तत्कालीय भारतीय समाज को काव्य का विषय बनाया। वह चाहते थे कि भारत में मुसलमान यहाँ के विभिन्न प्रान्तों की बोलचाल की भाषा को सीखें और प्रयोग में लाएँ। इससे आपसी सद्भाव बढेगा। अमीर–खुसरो ने उनकी सुविधा के लिए 'खालिकबारी' नामक फारखी–हिन्दी शब्दकोश लिखा।

अमीर खुसरो का जन्म पटियाली गाँव में हुआ था उनका बचपन भी ग्रामीण परिवेश में बीता। इन सभी सामाजिक सम्बन्धों की छवि खुसरो के काव्य में देखी जा सकती है। खुसरो ने अपने समय के समाज में लोगों के बीच हँसी–मजाक आदि को अपनी कविता में शामिल करके, उसे लोकप्रिय बनाने की कोशिश की है। उन्होने इसके लिए कई मुकरियाँ और पहेलियाँ ऐसी लिखीं जिनके दो–दो अर्थ निकलते हैं।

लपट लपट के वाके सोई,
छाती से पाँव लगा के रोई।
दाँत से दाँत बजे तो ताड़ा,
ऐ सखि साजन, ना सखि नाड़ा।
डाला था सबको मन भाया,
टाँग उठाकर खेल बनाया।
कमर पकड़ के दिया धकेल,
तब हौवे वह पूरा खेल।(1)

(झूला)

खुसरो की मुकरियों और पहेलियों में अनेक ऐसी हैं जो तत्कालीन समाज में व्याप्त विलासिता, स्त्री सौन्दर्य के प्रति आकर्षण को स्पष्ट करती हैं। ''

अति सुन्दर जग चाहे जाको,
मं भी देख भुलानी वाको।
देख रूप माया जो टोना,
ऐ साखि साजन ना सखि सोना।(2)

(सोना)

अपने समाज में गरीबों को कितना संघर्ष करना पड़ता था, इसे खुसरो ने अपने काव्य में बखूवी व्यंजित किया था।

लोहे के चने दाँत तले पाते हैं उसको,
खाया वह नहीं जाता है पर खाते हैं उसको।

अमीर खुसरो ने दैनिक प्रयोग में काम आने वाली सामग्रियों की व्यंजना पहेलियों और मुकरियों के माध्यम से अपने काव्य में की है।

गोल मटोल और छोटा मोटा,
हरदम वह तो जमीं पर लोटा।
खुसरो कहे नहीं है, झूठा,
जो ना बूझे अकल का खोटा।(3)

(लोटा)

गोरी सुन्दर पातली,
केसर काले रंग।
ग्यारह देवर छोड के,
चली जेठ के संग। (4)

(अरहर)

अमीर खुसरो के काव्य में तत्कालीन समाज के तीज त्योहारों, रस्म रिवाजों, शादी–विवाह आदि की झलक मिलती है। इससे उनकी कविता सामान्य जन से जुड़ गई। लड़की की विदाई का गीत आज तक लोक में प्रचलित है।

काहे को बियाहे विदेश,
सुन बाबुल मोरे।
हम तो बाबुल तेरे बागों की कोयल,
कुहकत घर–घर जाऊँ,
सुन बाबुल मोरे।
काहे को बियाहे परदेश
सुन बाबुल मोरे।
भइया को दीन्हे महल दुमहला,
हमका दिहे परदेश।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

सुन बाबुल मोरे।[5]

होली भारत का अत्यन्त लोकप्रिय त्योहार रहा है। होली के त्योहार को अमीर खुसरो ने अपपे काव्य में किस प्रकार अभिव्यक्त किया है।

दैया री मोहे भिजोया री,
शाह निजाम के रंग में,
कपड़े रंग के कुछ न होत है,
या रंग मने तन को डुबोया री,
दैयरी मोहे भिजोया री।[6]

इसी प्रकार सावन के महीने की कितनी सुन्दर अभिव्यक्ति की है खुसरों ने।

अम्मा मेरे बाबा को भेजोजी कि सावन आया।
बेटी तेरा बाबा तो बुढ्ढारी, कि सावन आया।
अम्मा मेरे भाई को भेजो जी कि सावन आया।
बेटी तेरा भाई तो बाला री कि सावन आया। [7]

वर्षा ऋतु का सौन्दर्य निराला ही होता है। अमीर खुसरो ने वर्षा ऋतु की सुन्दरता का वर्णन करते हुए लिखा हैं।

आज घिर आई दई भारी घटा कारी,
बन बोलन लागे मोर दैया री।
बन बोलन लागे मोर,
रिमझिम–रिमझिम बरसन लागी।
छाय रही चहुँ ओर,
आज बोलन लागे मोर। [8]

अमीर खुसरो ने अपने काव्य में तत्कालीन समाज की अभिव्यक्ति की है जिससे वे जनसामान्य में लोकप्रिय हुए।

मलिक मुहम्मद जायसी ने अपने काव्य में ठेठ अवधी भाषा का प्रयोग किया है। जायसी सच्चे अर्थों में लोकजीवन के गायक हैं। उनकी कथा भी लोकमानस में परम्परा से व्याप्त कथा है, जिसे उन्होंने बड़ी तन्मयता और मस्ती के साथ कहा है। उनकी भाषा, उनकी कल्पना, उनकी अभिव्यक्ति शैली का लोकजीवन से सीधा सम्बन्ध है। वे बड़ी सहजता से साथ हिन्दू परिवारों में प्रवेश कर गए हैं। उनके ऋतु वर्णन तथा बारहमासे अवध के सामान्य जन के जीवन में सीधा साक्षात्कार किया जा सकता है। 'पद्मावत' तो लोकजीवन का महाकाव्य है। जिस मिट्टी से जायसी का सम्बन्ध था उसकी सारी महक उसमें आदि से अंत तक व्याप्त है।

अवध की एक –एक वनस्पति ही नहीं, पशु पक्षी भी वहाँ मौजूद हैं। वहाँ के फल–फूल, वहाँ के लोगों द्वारा इस्तेमाल किया जाने वाला अनाज, उनके दैनिक जीवन में काम आने वाली एक–एक चीज सब जायसी के पद्मावत में है। कौन पक्षी कब बोलता है, कैसे बोलता हैं? जायसी सब जानते हैं।

अवध प्रदेश की ऋतुएँ कैसे आती है और उनका क्या रूप होता है यह जायसी के बारहमासे से स्पष्ट है। इन ऋतृओं के समय सामान्य जनजीवन की दशा होती है। जायसी ने सिंहलदीप वर्णन में बगीचों, सरोवरां, कुओं, बावलियों, पक्षियों, नगर, हाट, गढ़, राजद्वार, और हाथी–घोड़ों का वर्णन किया है। अमराई की शीतलता का वर्णन देखिए।

धन अमराउ लाग चहुँ पासा। उठा भूमि हुँत लागि अकासा।।
तरिवर सवै मलयगिरि लाई। भइ जग छाँह, रैनि होइ आई।।
मलय समीर सोहावनि छाँहा। जेठ जाड़ लागै तेहि माहाँ।[9]

जायसी ने बाजार का वर्णन कितना सुन्दर किया है।

कनक हाट सब कुहँ कुहँ लीपी। बैठ महाजन सिंघलदीपी।।
सोन रूप भल भएउ पसारा। धवल सिरी पोते घर बारा।।[10]

जायसी का विवाह वर्णन।

रचि रचि मानिक माँड़व छावा। और भुइँ रात बिछाव बिछावा
चंदन खाँभ रचे बहुभाँति। मानिक दिया बरहिं दिन राती।।
साजा राजा, बाजन बाजे। मदन सहाय दुबौ दर गाजे।।[11]

आचार्य शुक्ल ने जायसी के कई वर्णनों को लेकर असहमति भी जताई है। उन्होंने लिखा है, ''व्यंजनों, पकवानों, तरकारियों और मिठाईयों इत्यादि की बड़ी सूची है– इतनी लम्बी कि पढ़ने वाले का जी ऊब जाता है। यह भद्दी परम्परा जायसी के पहले से चली आ रही थी। सूरदास जी ने भी इसका अनुसरण किया है।

जायसी के पदमावत् में पनघट का कितना सुन्दर वर्णन किया है।

पानि भरै आवहिं पनिहारी।
रूप सरूप पद्मिनी नारी।।
पद्म गंध सिंघिंनी सारंग नैनी।
हंस गामिनी, कोकिल बैनी।।
आवहि झुंड सो पाँतिहि पाँती।
गवन सोहाइ सो भाँतिहि भाँति।।
कनक कलस, मुख चंद दियाहीं।
रहस केलि सन आवहि जाहीं।।
जा सहुँ वै हेरहि चख नारी।
बाँक नैन जनु हनदिं कटारी।।
केस मेघावर सिर ता पाईं।
चमकाहिं दसन बीजू कै नाईं।।[12]

निष्कर्ष –

अमीर खुसरो के काव्य में तत्कालीन समाज के तीज त्योहारों, रस्म रिवाजों, शादी–विवाह आदि की झलक मिलती है। इससे उनकी कविता सामान्य जन से जुड़ गई। अमीर खुसरो ने अपने काव्य में तत्कालीन समाज की अभिव्यक्ति की है जिससे वे जनसामान्य में लोकप्रिय हुए। मलिक मुहम्मद जायसी ने अपने काव्य में ठेठ अवधी भाषा का प्रयोग किया है। जायसी सच्चे अर्थों में लोकजीवन के गायक हैं। उनकी कथा भी लोकमानस में परम्परा से व्याप्त कथा है, जिसे उन्होंने बड़ी तन्मयता और मस्ती के साथ कहा है। उनकी भाषा, उनकी कल्पना, उनकी अभिव्यक्ति शैली का लोकजीवन से सीधा सम्बन्ध है। वे बड़ी सहजता से साथ हिन्दू परिवारों में प्रवेश कर गए हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. भोलानाथ तिवारी : अमीर खुसरो और उनका हिन्दी काव्य,प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. वही
3. वही
4. वही
5. परमानन्द पांचाल : भारत की महान विभूति अमीर खुसरो, हिन्दी बुक सेन्टर, दिल्ली।
6. वही
7. वही
8. वही
9. गोपीचंद नारंग : अमीर खुसरो का हिन्दवी काव्य, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली।
10. वही
11. परमानन्द पांचाल : भारत की महान विभूति अमीर खुसरो, हिन्दी बुक सेन्टर, दिल्ली।
12. वही।

RRIJM 2015, All Rights Reserved